

## මුහම්මද් නබිතුමා කවු ද? ඔහුගේ දුත පණිවිඩයේ සත්යතාව සඳහා සාක්ෂි මොනවා ද?

නබී මුහම්මද් -සල්ලල්ලාහු අලේහි ව සල්ලම- බින් අබ්දුල්ලාහ් බින් අබ්දුල් මුත්තලිබ් බින් හාෂිම්, අරබ් කේ ක්වීලා කුරේෂ් සේ හේ, ජෝ මක්කා මේ රහ්තා ටා। ආප් ඉස්මාඒල් බින් ඉබ්රාහීම් -උන් දෝනෝ පර් අල්ලාහ් කී ෂාන්ති හෝ- කී නස්ල් සේ ටේ।

ජේසා කි ඔල්ඩ් ටෙස්ටාමේන්ට් මේ උල්ලේෂ් කියා ග්‍යා හේ, අල්ලාහ් නේ ඉස්මාඒල් කෝ ආෂීර්වාද් දේනේ ඔර් උන්කේ වංෂ් සේ ආක් මහාන් සමුදාය් කෝ නිකාලනේ කා වාදා කියා ටා।

"ඉස්මාඒල් කේ විෂ්‍ය් මේ මේනේ තේරී සුන් ලී। දේෂ්, මේ උස්කෝ ආෂීෂ් දූංගා, උසේ ප්‍රදාන් කරුංගා, ඔර් බහුත් බදාඤ්ඤා, බාර්හ් හාකිම්, වහ් ජනේගා, ඔර් මේ උස්සේ ආක් බදී ජාති බනාඤ්ඤා।" [136] ඔල්ඩ් ටෙස්ටාමේන්ට්, උත්පත්ති පුස්තක 17:20

යහ් සබ්සේ බදා ප්‍රමාණ් හේ කි ඉස්මාඒල්, ඉබ්රාහීම් -උන් දෝනෝ පර් අල්ලාහ් කී ෂාන්ති හෝ- කේ වේධ් පුත්‍ර් ටේ। ඔල්ඩ් ටෙස්ටාමේන්ට්, උත්පත්ති පුස්තක 16:11

"ඔර් රබ් කේ දූත් නේ උස්සේ කහා : සුන්, තූ ගර්බ්වතී හේ, ඔර් තේරේ යහ් ආක් පුත්‍ර් හෝගා, ඔර් උස්කා නාම් ඉස්මාඒල් රක්නා, ක්‍යෝකි රබ් නේ තේරී ව්නිග් කෝ සුන් ලියා හේ।" [137] ඔල්ඩ් ටෙස්ටාමේන්ට්, උත්පත්ති පුස්තක 16:3

"ඉබ්රාහීම් -අලේහිස්සලාම්- කී පත්නී සාරා නේ අපනී මිස්ත්‍රී දාසී හාජරා කෝ ක්නාන් කී භුමි මේ ඉබ්රාහීම් කේ දස් සාල් කේ නිවාස් කේ බාද් ලියා, ඔර් උසේ ඉබ්රාහීම් කෝ පත්නී කේ රූප් මේ ප්‍රදාන් කියා।" [138]

මුහම්මද් -සල්ලල්ලාහු අලේහි ව සල්ලම- මක්කා මේ පේදා හුආ, උන්කේ පේදා හෝනේ සේ පහ්ලේ උන්කේ පිතා කී මූත්‍යු හෝ ගදී ටී। බච්පන් මේ හී ආපකී මා භී චල් බසී, ටෝ ආපකේ දාදා නේ ආපකී දේෂ්බාල් කී। ආප් ආපකේ දාදා භී චල් බසේ, ටෝ ආපකේ චචා අබූ තාලිබ් නේ ආපකෝ සම්බාලා।

ආප් අපනී සච්චාඒ ආව් අමාන්තදාරී මේ ප්‍රසිද්ධ් ටේ। ආප් ජාහිලියත් කේ ලෝගෝ කේ සාථ් න් බේඪ්තේ ටේ। න් උන්කේ සාථ් මනෝරංජන් ඔර් චේල් මේ ඔර් න් නූත්‍ය් තථා ගායන් මේ යා ෂරාබ් පීනේ මේ ෂාම්ලි හෝතේ ටේ ඔර් න් හී ඉන් කාමෝ කේ ක්‍රීබ් ජාතේ ටේ। ආප් නබී -සල්ලල්ලාහු අලේහි ව සල්ලම- ඉබාදත් කරනේ කේ ලිආ් මක්කා කේ නිකට් ආක් පහාද් මේ (හිරා ගුෆා) ජානේ ලගේ। ඉසී ස්ථාන් පර් ආප්පර් පහ්ලී වහ්‍ය් (අල්ලාහ් කා සන්දේෂ්) ආගී। මහාන් ආව් උච්ච් අල්ලාහ් කී ඔර් සේ ආක් ෆරිෂ්තා ආගා ඔර් ආප්සේ කහා : පද්, පද්। නබී -සල්ලල්ලාහු අලේහි ව සල්ලම- පද්නා-ලික්කනා නහී ජානත්තේ ටේ। ආප්නේ ෆර්මාගා : මේ පද්නා නහී ජානතා හූ। ෆරිෂ්තේ නේ දෝබාරා ආග්‍රහ් කියා। ආප්නේ ෆරි කහා : මේ පද්නා නහී ජානතා හූ। ෆරිෂ්තා නේ ආක් බාර් ඔර් ආග්‍රහ් කියා ඔර් ආපකෝ අප්නේ සාථ් පකද් කර් ඉස් තර්හ් මේචා කි ආපකී

हड्डी पसली एक हो गई और फिर कहा : पढ़। आपने फिर कहा : मैं पढ़ना नहीं जानता हूँ। तीसरी बार उन्होंने कहा : "अपने पालनहार के नाम से पढ़, जिसने पैदा किया। जिसने मनुष्य को रक्त को लोथड़े से पैदा किया। पढ़, और तेरा पालनहार बड़ा दयालु है। जिसने लेखनी के द्वारा ज्ञान सिखाया। इन्सान को उसका ज्ञान दिया जिसको वह नहीं जानता था।" [139] आपकी नबूवत का प्रमाण :

[सूरा अल-अलक़ : 1-5]

इसे हम आपकी जीविनी में पाते हैं। आप एक सच्चे एवं अमानतदार व्यक्ति के तौर पर जाने जाते थे। अल्लाह तआला ने कहा है :

"इससे पहले तो आप कोई किताब पढ़ते न थे और न किसी किताब को अपने हाथ से लिखते थे कि यह बातिल की पूजा करने वाले लोग शक में पड़ें।" [140] [सूरा अल-अनकबूत : 48]

रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- जिस बात का आह्वान करते, सबसे पहले उसे अपने आप पर लागू करते। आपके काम आपकी बातों की पुष्टि करते। आप अपने आह्वान के लिए कभी भी दुनिया में बदला नहीं चाहते थे। आपने गरीब, उदार, दयालु और विनम्र होकर जीवन बिताया। आप सबसे अधिक बलिदान देने वाले एवं लोगों के पास जो कुछ है, उसके बारे सबसे अधिक विमुख होकर रहे। अल्लाह तआला ने कहा है :

"यही वे लोग हैं, जिन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन प्रदान किया, तो आप उनके मार्गदर्शन का अनुसरण करें। आप कह दें : मैं इस (कार्य) पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता। यह तो सारे संसारों के लिए एक उपदेश के सिवा कुछ नहीं।" [141] [सूरा अल-अनआम : 90]

आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने अपनी नबूवत की सच्चाई पर कुरआन द्वारा प्रमाण पेश किए, जो कुरआन उन्हीं की भाषा में था और जो बयान एवं वाक्पटुता के शीर्ष पर था, जो उसे मानव की रचना से उपर करती है। अल्लाह तआला ने कहा है :

"क्या वे कुरआन पर विचार नहीं करते ? यदि वह (कुरआन) अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता, तो वे उसमें बहुत अधिक विरोधाभास पाते।" [142] [सूरा अल-निसा : 82]

"बल्कि क्या वे कहते हैं कि उसने इस (कुरआन) को स्वयं गढ़ लिया है ? आप कह दें कि इस जैसी गढ़ी हुई दस सूरतें ले आओ और अल्लाह के सिवा, जिसे बुला सकते हो, बुला लो, यदि तुम सच्चे हो।" [143] [सूरा हूद : 13]

"फिर यदि वे आपकी माँग पूरी न करें, तो आप जान लें कि वे केवल अपनी इच्छाओं का पालन कर रहे हैं, और उससे बढ़कर पथभ्रष्ट कौन है, जो अल्लाह की ओर से किसी मार्गदर्शन के बिना अपनी इच्छा का पालन करे ? निःसंदेह अल्लाह अत्याचार करने वाले लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।" [144] [सूरा अल-क़सस : 50]

जब मदीने में कुछ लोगों के यहाँ यह बात आम हो गई कि सूरज ग्रहण नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम- के बेटे इब्राहीम की मौत के कारण लगा है, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक भाषण दिया और एक ऐसी बात कही, जो आज तक सूरज ग्रहण के संबंध में लोगों के बीच प्रचलित अंधविश्वासों का खंडन करती है। इसे आपने चौदह शताब्दियों से भी पहले स्पष्ट और साफ़ रूप से कहा था :

"सूर्य एवं चाँद अल्लाह की निशानियों में से दो निशानियाँ हैं। उनका ग्रहण किसी के मरने या पैदा होने से नहीं होता। अतः जब तुम लोग ऐसा होते देखो, तो अल्लाह को याद करो और नमाज़ पढ़ो।" [145] [सहीह बुखारी]

यदि नबी झूठे होते, तो अनिवार्य रूप से अपने संदेशवाहक होने की बात लोगों को मनवाने के लिए इस अवसर का लाभ उठाते।

उनकी नबूवत का एक प्रमाण ओल्ड टेस्टामेंट में उनके नाम एवं गुणों का उल्लेख भी है।

"एक पढ़ना न जानने वाले व्यक्ति को किताब दी जाएगी और उससे कहा जाएगा कि इसे पढ़ो, तो वह कहेगा : मैं पढ़ना नहीं जानता हूँ।" [146] [ओल्ड टेस्टामेंट, यशायाह (३३:३३) की किताब 29:12]

मुसलमान इस बात पर विश्वास नहीं रखते कि वर्तमान में मौजूद ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट अल्लाह की तरफ से हैं, क्योंकि उनमें बदलाव हो चुके हैं। परन्तु वे इस बात पर विश्वास रखते हैं कि उन दोनों का स्रोत सही है। दोनों दरअसल तौरात और इंजील हैं, (जिन्हें अल्लाह ने अपने नबियों मूसा एवं ईसा -उन दोनों पर अल्लाह की शांति हो- की ओर वही की थी।। इसलिए ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट में कुछ चीज़ें पाई जाती हैं, जो अल्लाह की ओर से हो सकती हैं। अतः मुसलमान मानते हैं कि यदि यह भविष्यवाणी सही है, तो यह नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के बारे में बताती है और यह सही तौरत के अवशेषों में से है।

पैगंबर मुहम्मद जिस संदेश की ओर बुलाते थे, वह शुद्ध विश्वास है। वह दरअसल (एक पूज्य पर ईमान और केवल उसी की इबादत करना) है। आपसे पूर्व के सभी नबियों का यही संदेश था, जिसे आप सभी इनसानों के लिए लाए थे, जैसा कि कुरआन में आया है :

"(हे नबी!) आप लोगों से कह दें कि हे मानव जाति के लोगो! मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ, जिसके लिए आकाश तथा धरती का राज्य है। कोई वंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही, जो जीवन देता तथा मारता है। अतः अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके उस उम्मी नबी पर, जो अल्लाह पर और उसकी सभी (आदि) पुस्तकों पर ईमान रखते हैं और उनका अनुसरण करो, ताकि तुम मार्गदर्शन पा जाओ।" [147] [सूरा अल-आराफ़ : 158]

मसीह को पृथ्वी पर किसी ने उतना सम्मान नहीं दिया, जितना सम्मान मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- ने उन्हें दिया।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "मैं मरयम के बेटे ईसा का लोगों में सबसे निकटमत व्यक्ति हूँ। लोगों ने प्रश्न किया : हे अल्लाह के रसूल ! वह कैसे ? तो आपने फरमाया : सभी नबी भाई हैं, जैसे एक बाप और विभिन्न माँओं की संतान। उनका धर्म एक है। हमारे बीच कोई और नबी नहीं था (ईसा एवं मेरे बीच)।" (सहीह मुस्लिम)

कुरआन में नबी मुहम्मद से ईसा -उन दोनों पर अल्लाह की शांति हो- का अधिक बार उल्लेख (4 बार की तुलना में 25 बार) हुआ है।

कुरआन के अनुसार ईसा की माँ मरयम को संसार की दूसरी महिलाओं पर श्रेष्ठता दी गई है।

इसी तरह मरयम वह अकेली महिला हैं, जिनके नाम का कुरआन में उल्लेख हुआ है।

कुरआन में मरयम के नाम से एक पूरी सूरत मौजूद है। "ऐन अला-अल-हक़ीक़ह" फ़ातिन सब्री,

000.0000000000.000

यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई का सबसे बड़ा प्रमाण है। यदि आप झूठे नबी होते तो आपकी पत्नियों, माँ-बाप या बच्चों का उल्लेख होता। यदि आप झूठे नबी होते तो आप ईसा - अलैहिस्सलाम- की महिमा नहीं करते और उनपर ईमान को मुसलमान के ईमान का एक स्तम्भ घोषित नहीं करते।

नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- एवं हमारे समय के किसी भी संत या पुरोहित के बीच एक हल्की सी तुलना हमें आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की सच्चाई का पता देती है। आपने पैसे, प्रतिष्ठा या यहाँ तक कि किसी भी पुरोहित पद से मिलने वाले सभी विशेषाधिकारों को अस्वीकार कर दिया। आपने एतराफ़ को नहीं सुना और न विश्वासियों के पापों को क्षमा कर देने का दावा किया। आपने सीधे सृष्टिकर्ता की ओर लौटने की बात कही।

आपकी नुबवत की सच्चाई के सबसे बड़े प्रमाणों में से एक आपकी दावत का चारों दिशा में फैल जाना, लोगों का उसको स्वीकार करना और उसे अल्लाह की मदद प्राप्त होना है। अल्लाह ने मानव इतिहास में कभी नबी होने का झूठा दावा करने वाले किसी व्यक्ति को सफलता प्रदान नहीं की है।

अंग्रेजी दार्शनिक थॉमस कार्लाइल (1881-1795) ने कहा है : "इस युग के किसी भी सभ्य व्यक्ति के लिए यह सबसे बड़ी शर्म की बात है कि वह कुछ लोगों की कही हुई इस बात को सुने कि इस्लाम एक झूठा धर्म है और मुहम्मद एक धोखेबाज़ हैं। हमें ऐसी बेवकूफ़ाना और शर्मनाक बातों तथा अफवाहों के विरुद्ध लड़ना चाहिए। क्योंकि उस दूत ने जो संदेश दिया, वह हम जैसे लगभग दो सौ मिलियन लोगों के लिए बारह शताब्दियों से प्रकाशमान दीपक है। उनको उसी अल्लाह ने पैदा किया है, जिसने हमें पैदा किया है। मेरे भाइयों ! क्या आपने कभी देखा है कि एक झूठ बोलने वाला आदमी धर्म बना सकता है और फैला भी सकता है ? अल्लाह की शपथ ! यह आश्चर्यजनक है। झूठा आदमी ईंटों का एक घर नहीं बना सकता है, यदि वह चूने, प्लास्टर, मिट्टी आदि के गुणों से अवगत नहीं है। वह

जो भी घर बनाएगा वह मलबे का ढेर और सामग्री के मिश्रण का टीला होगा। वह अपनी नींव पर बारह शताब्दियों तक रहने योग्य नहीं होगा, जिसमें दो सौ मिलियन लोगों का निवास हो। वह ढह जाएगा और इस तरह नेस्तनाबूद हो जाएगा, जैसे था ही नहीं।" [150] पुस्तक "अल-अब्ताल"

ඉක්ලාමය පිළිබඳ ප්රශ්න හා පිළිතුරු

000000: 00000://000.0000000.000/0000/00/00/0000/54/

777777 777777: [777777://777.77777777.777/7777/77/77/7777/54/](#)

2600 00 00000000 2026 03:47:37 00